कुमार जीवन - 63

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ **कुमारों से :-** (1) सहजयोगी कुमार हो ना? निरन्तर योगी कुमार, कर्मयोगी कुमार। क्योंकि कुमार जितना अपने को आगे बढ़ाने चाहें उतना बढ़ा सकते हैं। क्यों? **निर्बन्धन है, बोझ नहीं हैं और जिम्मेवारी नहीं है इसलिए हल्के हैं। हल्के होने के कारण जितना ऊंचा जाना चाहे जा सकते हैं।** निरन्तर योगी, सहज योगी - यह है ऊंची स्थिति, यह है ऊंचा जाना। ऐसे ऊंच स्थिति वाले को कहते हैं - "विजयी कुमार"। विजयी हो या कभी हार, कभी जीत - यह खेल तो नहीं खेलते हो? **अगर कभी हार कभी जीत के संस्कार होंगे तो एकरस स्थिति का अनुभव नहीं होगा। एक की लग्न में मग्न रहने का अनुभव नहीं करेंगे। (06-12-1987)**

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ सदा कर कर्म में कमाल करने वाले कुमार हो ना? कोई भी कर्म साधारण नहीं हो, कमाल का हो। जैसे बाप की महिमा करते हो, बाप की कमाल गाते हो। ऐसे कुमार अर्थात् हर कर्म में कमाल दिखाने वाले। कभी कैसे, कभी कैसे वाले नहीं। **ऐसे नहीं - जहाँ कोई खींचे वहाँ खिंच जाओ। लुढ़कने वाले लोटे नहीं। कभी कहाँ लुढ़क जाओ, कभी कहाँ। ऐसे नहीं।**

➳ _ ➳ कमाल करने वाले बनो। अविनाशी हैं, अविनाशी बनाने वाले हैं - ऐसे चैलेन्ज करने वाले बनो। ऐसी कमाल करके दिखाओ जो हरेक कुमार चलता-फिरता फरिश्ता हो, दूर से ही फरिश्तेपन की झलक अनुभव हो।

➳ _ ➳ वाणी से सेवा के प्रोग्राम तो बहुत बना लिये, वह तो करेंगे ही लेकिन आजकल प्रत्यक्ष प्रूफ चाहते हैं। प्रत्यक्ष प्रमाण, सबसे श्रेष्ठ प्रमाण है। **प्रत्यक्ष प्रमाण इतने हो जाएं तो सहज सेवा हो जायेगी। फरिश्तेपन की सेवा करो तो मेहनत कम सफलता ज्यादा होगी।** सिर्फ वाणी से सेवा नहीं करो लेकिन मन वाणी और कर्म तीनों से साथ-साथ सेवा हो - इसको कहते हैं "कमाल"। **(06-12-1987)**

➢➢ इस ब्राह्मण जीवन में हार किसे कहेंगे ?

➳ _ ➳ स्थिति का नीचे गिर जाना

➳ _ ➳ आगे बढने का अनुभव न होना

➳ _ ➳ मानसिक उतार चडाव

➳ _ ➳ कर्मेन्द्रियों के वश हो जाना

→ जो पड़ना नहीं चाहते थे... वो पड लिया

→ जो सुनना नहीं चाहते थे... वो सुन लिया

→ जो देखना नहीं चाहते थे... वो देख लिया

→ जो खाना नहीं चाहते थे... वो खा लिया

→ जो बोलना नहीं चाहते थे... वो बोल लिया

➳ _ ➳ फीलिंग आ जाना

➳ _ ➳ उदास हो जाना

➳ _ ➳ दुखी हो जाना

➳ _ ➳ Inferiority Complex

➳ _ ➳ आदतों / संस्कारों के वशीभूत हो जाना

➳ _ ➳ मौसम की वजह से ज्ञान / योग का प्रभावित हो जाना

➳ _ ➳ अपनी श्रेष्ठ दिनचर्या को फॉलो न कर पाना

➳ _ ➳ सांसारिक बातों में रस उत्पन्न होना

➳ _ ➳ सुविधाओ में लिप्त हो जाना

→ इस वैराग के जीवन में

- विलासिता में डूब जाना

→ अविनाशी साधना विनाशी साधनों के आधार पर नहीं हो सकती

➳ _ ➳ किसी देहधारी से प्रभावित हो जाना

➳ _ ➳ बाबा से प्रेम की अनुभूति न होना

➳ _ ➳ मुरली में रस अनुभव न होना

➳ _ ➳ आलस्य और अलबेलापन के अधीन हो जाना

→ "गे गे.." करना

➳ _ ➳ उमंह उत्साह का अनुभव न होना

➳ _ ➳ ख़ुशी का गुम हो जाना

➳ _ ➳ नाम मान शान की इच्छा उत्पन्न होना

→ Desire Of Fame Is The Worst Of All The Desires……

➢➢ हार को जीत में परिवर्तित करने के लिए क्या करें ?

➳ _ ➳ सबसे पहले यह स्वीकार कीजिये की

→ हमारी हार हो चुकी है

- पर इससे मनुष्य के अहंकार को बहुत चोट पहुँचती है

➳ _ ➳ असफलता एक चुनोती है उसे स्वीकार करो

→ क्या कमी रह गयी है... देखो और सुधार करो

→ कुछ किये बिना ही जय जय कार नहीं होती

→ कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

→ नन्ही चींटी जब दाना लेकर चलती है

→ चढ़ती दीवारों पर... 100 बार फिसलती है

→ मन का विश्वास रगों में साहस भरता है

→ चढ़ कर गिरना... गिर कर चड़ना न अखरता है

→ आखिर उसकी मेहनत कभी बेकार नहीं होती

→ कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

→ डुबकियां सिन्धु में गोताखोर लगाता है

→ जा जा कर खाली हाथ लौट कर आता है

→ आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं जाती

→ कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती